

भारतीय संगीत में 'ताल' की अवधारणा एवं स्वरूप

डॉ. विश्वजीत साहू

Abstract

भारतीय संगीत परंपरा में ताल की अवधारणा अत्यंत प्राचीन, व्यापक एवं मौलिक रही है। सृष्टि के प्रारंभ से ही प्रकृति में समय, क्रम तथा लयात्मकता विद्यमान रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव चेतना एवं सांगीतिक अभिव्यक्तियों में देखा जा सकता है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक ताल भारतीय संगीत का आधार स्तंभ रहा है। वेदों में वर्णित छंद-व्यवस्था, ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत मात्राएँ तथा सामवेद की गायन परंपराएँ ताल के प्रारंभिक स्वरूप को स्पष्ट करती हैं। भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* एवं अभिनवगुप्त की *अभिनवभारती* में ताल-सिद्धांत का दार्शनिक एवं प्रयोगात्मक विवेचन प्राप्त होता है। कालांतर में मातंग मुनि, शारंगदेव, अहोबल आदि आचार्यों ने ताल को मार्गी एवं देशी परंपराओं में वर्गीकृत कर सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। वर्तमान में भारतीय संगीत की दो प्रमुख धाराओं— कर्नाटक एवं हिंदुस्तानी— में ताल की भिन्न-भिन्न संरचनाएँ एवं प्रयोगात्मक विशेषताएँ विकसित हुई हैं। यह शोध आलेख भारतीय ताल परंपरा के ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं संरचनात्मक पक्षों का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि ताल न केवल संगीत की संरचनात्मक आधारशिला है, बल्कि संपूर्ण सृष्टि की लयात्मक चेतना का प्रतीक भी है।

Keywords: ताल, लय, मात्रा, छंद, सामवेद, नाट्यशास्त्र, कर्नाटक ताल पद्धति, हिंदुस्तानी ताल पद्धति

1. भूमिका (Introduction)

भारतीय संगीत की संपूर्ण संरचना लय एवं ताल पर आधारित है। ताल वह तत्त्व है जो गायन, वादन और नृत्य को समय-सीमा में बाँधकर सौंदर्य एवं अनुशासन प्रदान करता है। प्रकृति के प्रत्येक घटक में निहित लयात्मकता ने मानव को संगीत की ओर प्रेरित किया। इसी क्रम में ताल की अवधारणा विकसित हुई, जिसने भारतीय संगीत को विशिष्ट पहचान प्रदान की।

2. ताल की दार्शनिक एवं वैदिक पृष्ठभूमि

वेदों में वर्णित छंदबद्ध मंत्र, ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत मात्राएँ तथा सामवेद की संगीतमय परंपरा ताल के प्राचीन स्वरूप को रेखांकित करती हैं। यज्ञीय परंपराओं में वाद्य-विन्यास एवं सामगान यह प्रमाणित करते हैं कि ताल की चेतना वैदिक काल में पूर्णतः विकसित थी।

3. शास्त्रीय ग्रंथों में ताल की अवधारणा

भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में ताल का प्रथम शास्त्रीय विवेचन प्राप्त होता है। अभिनवगुप्त की *अभिनवभारती* में ताल के दार्शनिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। मातंग मुनि एवं शारंगदेव ने ताल को मार्गी एवं देशी रूपों में वर्गीकृत कर उसकी संरचना को स्पष्ट किया।

4. कर्नाटक संगीत में ताल व्यवस्था

कर्नाटक संगीत में सात मूल ताल माने गए हैं, जिन पर पाँच जातियों तथा पाँच गतियों के संयोग से 175 तालों की संरचना होती है। यह पद्धति ताल के सूक्ष्म विभाजन एवं गणनात्मक स्पष्टता के लिए जानी जाती है।

5. हिंदुस्तानी संगीत में ताल पद्धति

हिंदुस्तानी संगीत में तालों का निर्धारण प्रायः मात्रा, विभाग, ताली-खाली एवं ठेका के माध्यम से होता है। समान मात्राओं के होते हुए भी भिन्न ठेका संरचनाओं के कारण तालों का स्वरूप एवं नाम भिन्न हो जाता है, जो इस पद्धति की प्रमुख विशेषता है।

6. तुलनात्मक अध्ययन

कर्नाटक एवं हिंदुस्तानी ताल पद्धतियों में संरचनात्मक भिन्नता होते हुए भी दोनों का मूल उद्देश्य लयात्मक अनुशासन एवं सौंदर्य की अभिवृद्धि है। दोनों परंपराएँ भारतीय संगीत की समृद्धि को प्रतिबिंबित करती हैं।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

ताल भारतीय संगीत का प्राणतत्त्व है। यह न केवल संगीत को संरचना प्रदान करता है, बल्कि उसे रसात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण बनाता है। भारतीय ताल परंपरा मनीषियों की शताब्दियों की साधना का परिणाम है, जिसने संगीत को शास्त्रीय गरिमा प्रदान की है।

References (संदर्भ)

1. भरतमुनि – नाट्यशास्त्र
2. अभिनवगुप्त – अभिनवभारती
3. शारंगदेव – संगीत रत्नाकर
4. मातंग मुनि – बृहद्देशी
5. अहोबल – संगीत पारिजात